



GURU REWBEN MASHANGVA

Guru Rewben Mashangva, popularly known as Guru, is a Naga folk artist and musicologist. He is the Director of the Naga Folk Music Academy, an academy exclusively dedicated to folk music as its name suggests. Not limited by his art of singing and performing, he is also a notable researcher of folk music of the tribal people of the North East India, especially that of the Naga Tangkhul. Largely inspired by nature, history and the culture of the people, his songs and performances have brought to the fore invaluable stories and music which were otherwise receding in the backdrop of popular culture. He has also been working continuously for the conservation of environment, conflict resolution and other social humanitarian cause.

2. Born on 21st June, 1961, at Choithar Village, Ukhrul district, Manipur, Guru Rewben grew up learning traditional Tangkhul folk songs (HAO LAA) from the village elders. Then through Radio, he was introduced to various other forms of music from across the world. Prompted by the songs that he had learned and heard, he taught himself to play various indigenous instruments and guitar/sitar. From then he started composing his own songs and music. It was not until he was 31 years of age that he made his breakthrough when he performed for a large crowd at the Naga Student Federation (NSF) Conference at Ukhrul in 1992. Thereafter, he became a household name.

3. Guru Rewben is recognized as the pioneer of Naga folk blues due to his distinctive contributions towards the preservation and popularization of folk music. He has so far released three music album Tantivity (1999), Creation (2007) and Our Story (2011). He has performed at various events, national as well as international; few of his notable performances include those at the World Social Forum (2006) in Delhi; Festival of SAARC Folklore (2007) in New Delhi; the Asia Indigenous People Fair (2008) at Chiangmai in Thailand; Rajasthan International Folk Festival (2009) in Jodhpur; India-China Handshake Concert (2015) at Kunming; and China-India Business Conclave (2016) at Yunnan in China. He was also a visiting professor in the Department of Theatre Arts at Sarojini Naidu School of Arts and Communication, University of Hyderabad.

4. Guru Rewben continues to guide many researchers of Anthropology in the North East of India. In a bid to preserve the culture and heritage, he also runs a private Folk Museum of the Tangkhuls at Ukhrul, Manipur. His endeavour towards this end is also reflected in his art of crafting, reinventing and producing traditional folk music instruments such as the Tingteila (folk fiddle), the four holes bamboo flute, Yangkahui, and Cow Bell Percussion. He has also acted, composed and co-produced multiple documentaries and films including national award winning film, 'Songs on Mashangva' in which he acted and also composed music for, and the national award winning documentary, 'Wearing the Face' by Joshy Joseph for which he composed folk music.

5. Guru Rewben has been honoured with various awards including title of 'Guru' under Guru-Shishya Parampara Scheme 2004-2005 under the Ministry of Culture; the Manipur State Best Music Award for the feature film, 'Mayophigi Macha' in 1994 (his first award); State Kala Akademi Award for Tribal Folk Music in 2004-2005; North East Excellence Award in 2009 in recognition of his innate musical mastery and knowledge of Naga Folk Music; National Tribal Award for his contribution to the development of tribal music from the Ministry of Tribal Affairs; Best Music Director in 2019 for the non-feature film, 'My Generous Village' at the 12th Manipur State Film Awards.



गरु रुबेन मशांवा

गुरु के नाम से विख्यात गरु रुबेन मशांवा एक नागा लोक कलाकार और संगीतज्ञ हैं। वह विशेष रूप से लोक संगीत के प्रति समर्पित अकादमी नागा लोक संगीत अकादमी के निदेशक हैं। गायन और प्रदर्शन कला के अलावा, वह पूर्वोत्तर भारत, विशेष रूप से नागा तंगखुल के जनजातीय लोक संगीत के एक उल्लेखनीय शोधकर्ता भी हैं। उनके गीत और अभिनय अधिकतर प्रकृति, इतिहास और लोक संस्कृति से प्रेरित होकर उन अमूल्य कथाओं और संगीत को सामने लाए हैं जो लोकप्रिय संस्कृति के नाम पर गुम होता जा रहा था। वह पर्यावरण संरक्षण, संघर्ष समाधान, अन्य सामाजिक और मानवीय मुद्दों के लिए भी निरंतर काम कर रहे हैं।

2. मणिपुर के उखरूल जिले के चोइथर गांव में 21 जून, 1961 को जन्मे, गरु रुबेन, गांव के बुजुर्गों से पारंपरिक तंगखुल लोक गीत (हाओ ला) सीखते हुए बड़े हुए। फिर रेडियो के माध्यम से, उनका परिचय दुनिया भर के संगीत की विभिन्न शैलियों से हुआ। उन्होंने गीतों को सीखकर और सुनकर अनेक स्वदेशी वाद्ययंत्र और गिटार बजाना सीखा। इसके बाद, उन्होंने अपने स्वयं के गीत-संगीत की रचना शुरू कर दी। जब वह 31 वर्ष के थे तो उन्होंने 1992 में उखरूल में नागा स्टूडेंट फेडरेशन (एनएसएफ) के सम्मेलन में श्रोताओं की विशाल भीड़ के सामने प्रस्तुति दी। इसके बाद उनका नाम घर-घर में लोकप्रिय हो गया।

3. गरु रुबेन को लोक संगीत के संरक्षण और उसे लोकप्रिय बनाने में विशिष्ट योगदान के लिए नागा लोक ब्लूज के अग्रणी के रूप में जाना जाता है, उन्होंने अब तक तीन संगीत एल्बम टैंटिविटी (1999), क्रिएशन (2007) और आवर स्टोरी (2011) जारी किए हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में प्रस्तुति दी है। उन्होंने दिल्ली में वर्ल्ड सोशल फोरम (2006); नई दिल्ली में सार्क लोकगीत महोत्सव (2007); थाईलैंड में चियांगमाई में एशिया इंडिजिनस पीपल फेयर (2008); जोधपुर में राजस्थान अंतरराष्ट्रीय लोक महोत्सव (2009); कुनमिंग में इंडिया-चायना हैंडशेक कंसर्ट (2015); और चीन के युन्नान में चीन-भारत बिजनेस कॉन्क्लेव (2016) में उल्लेखनीय प्रस्तुति दी हैं। वह हैदराबाद विश्वविद्यालय के सरोजिनी नायडू स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड कम्युनिकेशन में थिएटर आर्ट्स विभाग में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे।

4. गरु रुबेन भारत के पूर्वोत्तर में नृविज्ञान के कई शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन करते रहते हैं। संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने के लिए, वह मणिपुर के उखरूल में तंगखुल का एक निजी लोक संग्रहालय भी चलाते हैं। इस उद्देश्य के प्रति उनका प्रयास टिंगटिएला (फोक फीडल), चार छेद वाली बांस की बांसुरी, यांगकाहुई और काउबैल प्रकुशन जैसे पारंपरिक लोक संगीत वाद्ययंत्रों के शिल्प, पुनर्खोज और उनकी निर्माण कला में भी परिलक्षित होता है। उन्होंने कई उल्लेखनीय वृत्तचित्रों और फिल्मों में अभिनय, संगीत रचना और सह-निर्माण भी किया है। जिनमें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म, 'मशांवा पर गीत' जिसमें उन्होंने अभिनय किया और संगीत की रचना भी की, और जोशी जोसेफ का राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता वृत्तचित्र, 'वियरिंग द फेस' शामिल हैं, जिसके लिए उन्होंने लोक संगीत की रचना की।

5. गरु रुबेन को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत गुरु-शिष्य परंपरा योजना 2004-2005 के तहत 'गुरु' की उपाधि; 1994 में 'मेयोफिगी माचा' फीचर फिल्म के लिए मणिपुर राज्य का सर्वोत्तम संगीत पुरस्कार, (उनका पहला पुरस्कार); 2004-2005 में जनजातीय लोक संगीत के लिए राज्य कला अकादमी पुरस्कार; 2009 में उनकी नैसर्गिक संगीत प्रतिभा और नागा लोक संगीत के ज्ञान के लिए पूर्वोत्तर उत्कृष्टता पुरस्कार; जनजातीय मामलों के मंत्रालय से जनजातीय संगीत के विकास में उनके योगदान के लिए राष्ट्रीय जनजातीय पुरस्कार; 12वें मणिपुर राज्य फिल्म पुरस्कार समारोह में गैर-फीचर फिल्म 'माई जेनरस विलेज' के लिए 2019 में सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार शामिल हैं।